बच्चों के नामों से पढ़ना–लिखना सिखाना

मीनू पालीवाल

कक्षा में बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए वर्णमाला-आधारित अर्थहीन, नीरस और रटवाने पर आधारित विधियों का उपयोग किया जाना आम बात है। लेखिका शुरुआती स्तर पर बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए उनके नामों पर आधारित अर्थपूर्ण व रुचिकर गतिविधियाँ ईज़ाद करती हैं, और उन्हें कक्षा में आज़माती हैं। लेख में ऐसी ही 10 गतिविधियों को आयोजित करने के तरीक़ों और उनसे मिले अनुभवों का विश्लेषणपरक विवरण प्रस्तुत किया गया है। सं.

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में फ़ेलोशिप के दौरान बच्चों को पढ़ना-लिखना किस तरह सिखाया जाए, यह करके सीखने का मौक़ा मिला। आमतौर पर पढ़ना-लिखना सिखाने का मतलब अक्षर-मात्रा रटवाना समझ लिया जाता है, और यह अर्थहीन, नीरस प्रक्रिया एक लम्बे समय तक दोहराई जाती है। पढ़ना-लिखना सिखाने में अर्थ की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है यह समझना ज़्यादा मुश्किल बात नहीं है, पर बावजूद इसके आज भी वर्णमाला रटवाने का काम बदस्तूर जारी है।

सिल्विया एश्टन वार्नर अपनी किताब 'अध्यापक' (*टीचर*) में 'इमोशनली चार्ज्ड' शब्दों से पढ़ना सिखाने की बात करती है। 'इमोशनली चार्ज्ड' यानी ऐसे शब्द जिनका सीखने वाले से एक भावनात्मक रिश्ता है, सीखने वाला उससे जुड़ पाता है और इसीलिए इन शब्दों का उसकी ज़िन्दगी में महत्त्व है। मसलन, किसी बच्चे के लिए उसकी माँ का नाम, उसका स्वयं का नाम, उसके दोस्तों के नाम, या जिससे बच्चों को डर लगता है, जैसे– साँप। इन शब्दों से बच्चों के दिमाग़ में शायद एक ज़्यादा साफ़ और गहरी मानसिक छवि बनती है, चित्र बनता है। हर बच्चा उसकी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों के नामों को बार-बार सुनता है, बोलता है, कक्षा के हर बच्चे को वो जानता है, कुछ बच्चे उसके ख़ास दोस्त भी होते हैं जिनसे उसका ख़ास लगाव होता है और इन सभी दोस्तों के नाम भी 'इमोशनली चार्ज्ड' शब्दों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। ऐसे शब्दों से बच्चों को पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया अर्थपूर्ण और रुचिपूर्ण बन जाती है।

मैंने भी बच्चों में अपना नाम लिखना सीखने की इच्छा देखी। मुझे लगा कि उनके नामों से ज़्यादा उनके लिए शुरुआती स्तर पर क्या महत्त्वपूर्ण हो सकता है। पहली कक्षा में ज़्यादातर स्कूलों में बच्चे शायद काफ़ी कम शब्द लिखना और पढ़ना जानते हों, परन्तु अपना नाम लिखना और पढ़ना (पहचानना) लगभग सभी जानते हैं। शुरुआत में बच्चे नाम को किसी चित्रकारी के तौर पर पहचानते हैं। वे ध्वनि चिह्नों की आकृति को बहुत बारीक़ी से नहीं देख पाते। बच्चे लिखे हुए को चित्रों से अलग करके बारीक़ी से देखने-समझने लगें, यह अवधारणा निर्माण कर पाएँ कि बोले जा रहे शब्द कुछ ध्वनियों से मिलकर बने हैं, इसके लिए हमने बच्चों के नामों के साथ कुछ गतिविधियाँ बनाईं।

बच्चों के नामों के साथ बनाई गई इन गतिविधियों को कक्षा में करके देखा, जिनमें मेरे साथ-साथ बच्चों को भी बहुत मज़ा आया। जब किसी कार्य को करने में बच्चों को मज़ा आता है तो इससे उनका सक्रिय प्रतिभाग सुनिश्चित होता है। इन गतिविधियों के द्वारा कक्षा 1 में चयनित 'हिन्दी की वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं' इस प्रतिफल को प्राप्त करने पर काम किया गया।

पहली गतिविधि

दीवार पर लगे उपस्थिति चार्ट पर अपनी उपस्थिति दर्ज करना। इसमें बच्चे अपने नाम के साथ-साथ तारीख़, दिन, अपने नाम के आगे-पीछे किन बच्चों के नाम लिखे हैं, उनसे भी परिचित होते हैं।

कक्षा अनुभव

इस गतिविधि के दौरान मैंने देखा कि जसकरण और विदेशिनी जैसे ज़्यादा अक्षर वाले नाम अधिकतर बच्चे पहचान रहे थे। शब्द कैसा दिखता है वह भी शुरुआती दौर में, बच्चों को काफ़ी मदद देता है। असल में, इस तकनीक का उपयोग हम बड़े भी ख़ूब कर रहे होते हैं, लेकिन हम अपने पठन पर इतना ध्यान नहीं देते और इस वजह से हम स्वयं भी हमारे इस कौशल के बारे में सचेत नहीं होते।

उपस्थिति दर्ज करते-करते जब कुछ दिन बीत गए तो चार्ट फट गया और दीवार से गिर गया। चार्ट को कक्षा में रखे कचरे के डब्बे में डाल दिया गया। उसी दिन कक्षा में सब बच्चों को स्कूल में जो-जो उन्हें दिखता है, उसका चित्र बनाने और नाम लिखने की गतिविधि करवाई जा रही थी। सभी बच्चों को एक ख़ाली पृष्ठ देकर कहा गया कि वे अपने पन्ने पर पहले अपना नाम लिखें और फिर दिया गया काम शुरू करें। बच्चे को अपना नाम ठीक से लिखना नहीं आया, उसने कचरे के डब्बे से चार्ट निकालकर अपना नाम पहचान कर अपने पन्ने पर लिखा।

दूसरी गतिविधि

कोई भी एक ध्वनि, जैसे– 'न' किस-किस बच्चे के नाम में आती है, बच्चों से पूछना। जब मैं यह गतिविधि कर रही थी तब बच्चों ने यह भी बताया कि आधा 'न' अक्षर भी कुछ नामों में आता है, जैसे– भूपेन्द्र के नाम में आधा 'न' आता है। यह कितना सूक्ष्म अवलोकन है! जब यह गतिविधि करवाई जा रही थी तो एक बच्ची कक्षा में लगाए गए उपस्थिति चार्ट को देखकर बताने लगी कि किन-किन बच्चों के नाम में 'न' आता है। बच्ची ने पूछे गए सवाल का उत्तर देने के लिए जो आइडिया लगाया वह देखकर ख़ुशी महसूस हुई।

तीसरी गतिविधि

बच्चों के नामों को ध्वनियों में तोड़ना। पहले शिक्षक बहुत-से नामों को बच्चों से दोहराव करवाते हुए ध्वनियों में तोड़ने की प्रैक्टिस करवाएँ। यही काम बच्चे करें। इसके बाद शिक्षक किसी बच्चे के नाम के टुकड़े बोलें और बच्चों से पूछें कि इन ध्वनियों से मिलकर किस बच्चे का नाम बनता है।

कक्षा अनुभव

स्कूल की कक्षा 2 में अभिलाषा नाम की एक बच्ची थी। मैंने इस नाम को बहुत धीरे-धीरे ध्वनियों में तोड़ा। बाक़ी बच्चे नहीं पहचान पाए, पर अभिलाषा समझ गई कि उसका नाम है। मैंने इशारे से उसे थोड़ा ठहरने को कहा। बच्चों को चुनौती दी कि तुम्हारी ही कक्षा के किसी बच्चे का नाम है, ज़रा दिमाग़ पर ज़ोर डालो। बच्चे अनुरोध करने लगे कि मैं दोबारा उस नाम को ध्वनियों में बोलूँ। 4-5 बार में बच्चे पहचान गए कि किसका नाम टुकड़ों में लिया गया था। इस प्रक्रिया में बच्चों ने ख़ुद से इस बात पर ध्यान दिया कि नाम छोटा है या लम्बा, पहली ध्वनि क्या है, और उस ध्वनि से कक्षा में किसका नाम शुरू होता है। बच्चों को संघर्ष करते देखने में बहुत मज़ा आया। क्या यह विचारणीय बात नहीं है कि जिस बच्ची का नाम था वह पहली बार

में ही समझ गई कि उसके नाम की ही ध्वनियाँ हैं जो अलग-अलग करके बोली गई थीं (अ भि ला षा) और बाक़ी बच्चों को समय लगा। यह घटना भी इस बात का प्रमाण है कि जिन शब्दों से पढ़ना-लिखना सिखाया जाना चाहिए उन शब्दों की सीखने वाले बच्चों के लिए अहमियत होनी चाहिए।

चौथी गतिविधि

अकसर स्कूलों में बच्चे 'क', 'ख' देखकर कबूतर या ख़रगोश बोलते हैं। 'क' से कबूतर और 'ख' से ख़रगोश की बजाय हमें बच्चों की यह समझने में मदद करनी होती है कि हर शब्द कुछ अक्षरों से मिलकर बना है। जब उनके नाम से अक्षरों को एक-एक करके मिटाया और पढ़ा जाता है तो बच्चों का ध्यान इस ओर जाता है।

जब बच्चे मौखिक स्तर पर शब्दों को ध्वनियों में तोड़ना सीख जाएँ तब यही गतिविधि लिखित तौर पर करना और इस माध्यम से बच्चों को अक्षरों की आकृति से परिचित करवाना। पहला अक्षर मिटाना, दूसरा अक्षर मिटाना, अन्तिम अक्षर मिटाना और बच्चों से पढ़वाना। उदाहरण के लिए, रागिनी नाम को देखें :

'रा' मिटाने के बाद पढ़ने बोलना : _गिनी

'गि' मिटाने के बाद पढ़ने बोलना : रा_नी–रानी

'नी' मिटाने के बाद पढ़ने बोलना : रागि_

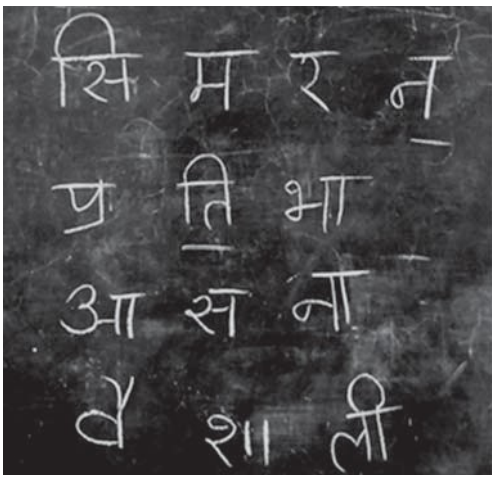

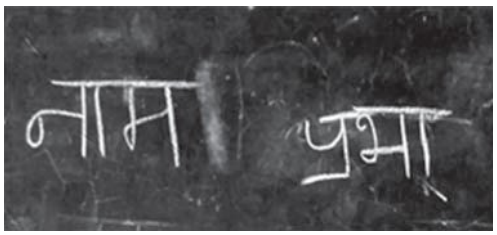

बच्चों के द्वारा बनाए गए शब्द

इस गतिविधि में बच्चों को ख़ुद का नाम होने से ध्वनियों के लिखित रूप को पहचानने में मदद मिलती है। जैसे– बच्चों को पता है कि 'रागिनी' नाम लिखा है। यदि इसको टुकड़ों में बोर्ड पर लिखा– 'रा' 'गि' 'नी', तब बच्चे यदि भूल गए कि 'नी'– यह क्या लिखा है तो बच्चे रागिनी बोलकर देखेंगे और बोलकर देखने से अन्तिम ध्वनि की आकृति को पहचान लेंगे।

पाँचवीं गतिविधि

कुछ बच्चों के नामों को ध्वनियों में तोड़कर बोर्ड पर लिखें। इनके टुकड़ों को उंगली रखकर पढ़ें। फिर अलग-अलग नामों से टुकड़े जोड़कर नए शब्द बनाएँ। बच्चों ने आसना से 'ना' लेकर सिमरन के 'म' से जोड़कर 'नाम' शब्द बना दिया। इस तरह से हम बच्चों को उनके नामों की मदद से अन्य शब्द ख़ुद से बनाने और पढ़ने के क़ाबिल बना पाएँगे। इस पूरी प्रक्रिया में बच्चे लगातार मानसिक तौर पर संलग्न होंगे क्योंकि ये काम बच्चों को एक खेल / पज़ल की तरह लगता है।

छठवीं गतिविधि

नामों को कुछ इस तरह लिखकर पढ़वाना।

1	अभिलाषा	रानी
2	अभिला_	रा
3	अभि_ _	
4	अ_ _ _	

- अ + रानी = अरानी
- अभि + रानी = अभिरानी
- अभिला + रानी = अभिलारानी

इस गतिविधि में बच्चों को ठहरकर शब्दों को देखना, पहले से जो शब्द पहचान आते हैं उनकी मदद से डिकोडिंग की प्रक्रिया सीखने पर लगातार काम होता है।

सातवीं गतिविधि

बच्चों से उनकी कक्षा के बच्चों के नाम अक्षरों की संख्या के आधार पर वर्गीकृत करवाना।

नामों को कुछ इस तरह लिखकर पढ़वाना।

1	दो अक्षर वाले नाम	तीन अक्षर वाले नाम	चार अक्षर वाले नाम
2	मीना	मिताली	अनामिका
3	मीता		
4			

एक-सी ध्वनि से ख़त्म होने वाले नाम
रानी
विदेशिनी
यामिनी

आठवीं गतिविधि

बच्चों की कापियाँ, पन्ने उन बच्चों से बँटवाना जिनको पढ़ने में ज़्यादा परेशानी है। लिखना-पढ़ना किसी उद्देश्य के लिए होना चाहिए। जब हम बच्चे से कहेंगे कि उसे कापियाँ बाँटनी हैं, बच्चे को नाम पढ़ने का एक उद्देश्य मिलेगा। वह सिर्फ़ इसलिए नहीं पढ़ रहा होगा कि उसकी शिक्षिका ने उसे पढ़ने के लिए कहा है।

इस काम को करने के लिए बच्चा, कॉपी में किसका नाम लिखा है, यह पता करने के लिए किसी भी तरह की मदद लेने के लिए स्वतंत्र है। मेरे अनुभव में मैंने पाया कि इस काम को करने के लिए वे बच्चे भी उत्सुक होते हैं जो अभी सबका नाम नहीं पहचानते। पर कुछ ही दिनों में यह काम करने के दौरान वे सभी के नाम पहचानने लगते हैं।

नौवीं गतिविधि

नाम के अक्षरों का क्रम उलट-पुलट करना और पहचानने के लिए कहना।

जैसे– विदेशिनी – विशिदेनी

अजय – जयअ

शुरुआत में पहली ध्वनि को न ही बदलें तो बेहतर होगा। धीरे-धीरे पहली ध्वनि भी बदल सकते हैं। इस गतिविधि को करने के दौरान किसका नाम लिखा है, यह पता लगाने के दौरान बच्चे कुछ मानदण्ड तय कर रहे होंगे, मसलन, कितने अक्षर का नाम है, हमारी कक्षा में किस-किस का नाम उतने ही अक्षर का है। फिर उनका ध्यान ध्वनियों की ओर जाएगा कि किसके नाम में ये ध्वनियाँ आती हैं।

दसवीं गतिविधि

बच्चों से इस तरह की पहेली बनाने को कहना।

पहेली 1 : मैं एक ऐसे बच्चे के बारे में बात कर रही हूँ जिसका नाम 3 अक्षर का है, और वो काफ़ी कम बोलती है। बताओ, मैं किसके बारे में बात कर रही हूँ?

पहेली 2 : मैं जिसके बारे में बात कर रही हूँ उसका नाम 'अ' अक्षर से शुरू होता है, और वो रोज़ स्कूल आता है। बताओ, मैं किसके बारे में बात कर रही हूँ?

ऊपर लिखे क़िस्सों को पढ़कर हम यह समझ सकते हैं कि किसी गतिविधि को करने का उद्देश्य बच्चों को पता हो तो वे उस गतिविधि में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं और किसी काम को पूरा करने के तरीक़े ढूँढ़ते हैं। ऊपर सुझाई गई गतिविधियों से हम बच्चों को सिर्फ़ कुछ अक्षर नहीं सिखा रहे, बल्कि उनमें अवधारणा

निर्माण पर काम कर रहे हैं कि शब्द ध्वनियों से मिलकर बनते हैं, और ध्वनियों को प्रतीकों (अक्षर) के माध्यम से लिखा जाता है और उनके (बच्चों) द्वारा बोली गई बात लिखी भी जा सकती है। बच्चे कई बार शब्दों को ध्यान से नहीं देखते, इन गतिविधियों से बच्चों को लिखे हुए शब्दों की आकृतियों को ज़्यादा ध्यान से देखने की सहज ज़रूरत महसूस हुई। जैसे कि हमने अपने अनुभव में देखा है कि कुछ बच्चे 'क' को ही कबूतर पढ़ देते हैं। इन गतिविधियों को थोड़ा विस्तार भी दिया जा सकता है। जैसे– किसी एक बच्चे के बारे में कुछ वाक्य बच्चों से पूछकर लिखना, बच्चों के नामों को लेते हुए कोई छोटी कहानी बनाना आदि। *सीखने के प्रतिफल* दस्तावेज़ कहता है, "पहली बार स्कूल आने वाला बच्चा बहुत-से शब्दों और उनके अर्थों से परिचित होता है। चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त होती हैं, इसलिए पढ़ने का प्रारम्भ अर्थपूर्ण सामग्री से और किसी उद्देश्य के लिए होना चाहिए।"

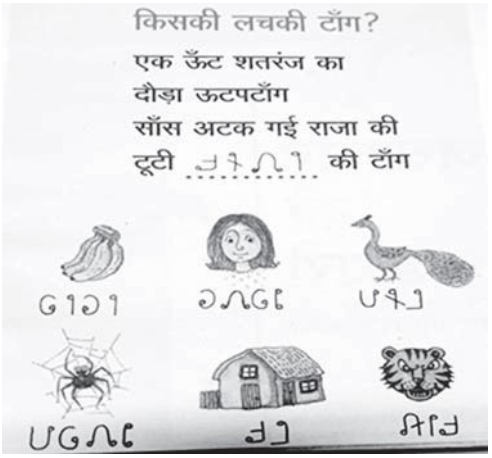

प्लूटो पत्रिका से साभार

बच्चों के नामों को इस्तेमाल करके हम अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण रूप से काम कर रहे होंगे। इस प्रक्रिया में हमारी और बच्चे की भागीदारी बराबर होगी। बच्चे सिर्फ़ सुनकर हुक्म की तामील नहीं कर रहे होंगे। बच्चे जिस प्रक्रिया से पढ़ना सीख रहे होंगे उस प्रक्रिया को ऊपर दी गई पहेली को हल करने के दौरान आप अनुभव कर सकते हैं।

मीनू पालीवाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 2017 से काम कर रही हैं। आप फ़ेलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं। इससे पहले उन्होंने 6 वर्ष आईसीआईसीआई बैंक में काम किया। वे अपने मन में आने वाले सवालों की तलाश में शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ काम करना उन्हें अच्छा लगता है।

सम्पर्क : meenu.paliwal@azimpremjifoundation.org